SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

भारतीय सिनेमा और संगीत का महत्व

DR. DHWANI SINGH

Assistant Professor, Department of Journalism and Mass Communication
Shri Ramswaroop Memorial University, Lucknow, U.P.

सार

संगीत एक कला रूप है जिसका माध्यम ध्वनि और मौन है, जो समय के साथ घटित होता है। संगीत के सामान्य तत्व हैं पिच (जो माधुर्य और सामंजस्य को नियंत्रित करता है), लय (और इससे जुड़ी अवधारणाएं टेम्पो, मीटर और आर्टिक्यूलेशन), गतिकी, और समय और बनावट के ध्वनि गुण। निर्माण, प्रदर्शन, महत्व और यहां तक कि संगीत की परिभाषा भी संस्कृति और सामाजिक संदर्भ के अनुसार बदलती रहती है। संगीत कड़ाई से संगठित रचनाओं (और प्रदर्शन में उनके पुनरुत्पादन) से लेकर कामचलाऊ संगीत के माध्यम से अलंकृत टुकड़ों तक होता है। संगीत को शैलियों और उप-शैलियों में विभाजित किया जा सकता है, हालांकि संगीत शैलियों के बीच विभाजन रेखाएं और संबंध अक्सर सूक्ष्म होते हैं, कभी-कभी व्यक्तिगत व्याख्या के लिए खुले होते हैं, और कभी-कभी विवादास्पद होते हैं। ''कला'' के भीतर, संगीत को एक प्रदर्शन कला, एक ललित कला और श्रवण कला के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। हरियाणा लोक संगीत में समृद्ध है, जिसकी जड़ें पुराने जमाने के शास्त्रीय संगीत में गहरी जड़ें जमा चुकी हैं। 'श्रृंगार रस' (प्रेम गीतों पर आधारित) का भैरवी, जयजयवंती, 'गारा' (एक फारसी शैली), 'खमाज' और 'काफी' जैसे प्रसिद्ध रागों के साथ अप्रत्यक्ष संबंध है। हालांकि, लोक गायक को पता नहीं है कि एक राग क्या है और बस बाहर जाकर गाता है। हरियाणा का संगीत लोक संगीत मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभाजित है, अर्थात् शास्त्रीय रूप और देश पक्ष संगीत। गायन का शास्त्रीय रूप मूल रूप से पौराणिक कथाओं के गीतों पर है – 'अल्लाह', 'जयमल' – 'फट्टा', 'बरहमास', 'तीज' गीत, 'फग' और 'होली' गीत। कंट्री साइड म्यूजिक में पौराणिक कथाएं जैसे पुराण – 'रग मांड' में 'भगत', औपचारिक गीत, मौसमी गीत, गाथागीत आदि शामिल हैं। याददाश्त बढ़ाने से लेकर तनाव कम करने तक, शास्त्रीय संगीत सुनने से आश्चर्यजनक और आश्चर्यजनक लाभ हो सकते हैं। जानिए शास्त्रीय संगीत आपके जीवन को बेहतर बनाने में कितनी क्षमता रखता है।"

कुंजी शब्द:- *भारतीय फिल्म, संगीत, चलचित्र, संचार*

फिल्मों में संगीत का आगमन

भारतीय फिल्म संगीत अनेक सुनहरे पड़ावों से गुजरा है। 'आलम आरा' पहली बोलती हुई फिल्म थी। लेकिन इससे पहले भी फिल्मों में संगीत था। बेशक यह पार्श्व संगीत नहीं था। फिल्म के पर्दे पर चलते चित्रों के मुताबिक साजिंदे संगीत बजाया करते थे। वह फिल्म के पर्दे के निकट बैठे होते थे। तबला, हारमोनियम और सारंगी बजती। लोग पास में ही बज रहे इस संगीत का मजा लेते थे और उनकी नजरें फिल्म के परदे पर होती थीं।लेकिन जब 'आलमआरा' आई तो सब कुछ बदल गया। संगीत बनाना तब भी इतना सरल नहीं था। पहले शूटिंग की जगह पर संगीत रिकॉर्ड होता था। साजिंदे नजर न आएं इसलिए उन्हें वहीं पास में पेड़ या किसी और जगह छिपा कर रखा जाता था। उनकी पहचान छिपाने के लिए कभी-कभार तो उनके शरीर को पत्तों या किसी झाड़ी से भी लपेट दिया जाता था।फिल्म संगीत में हमें अपनी संस्कृति के कई रंग दिखे। इन गीतों में सावन के झूले भी हैं, उड़ती पतंगे हैं, गरजती घटाएं है, विरहन की आग है तो बागों की बहार है। प्यार के नग्मों के लिए ऐसी धुनें बजी कि युवा उसमें खो गए। विरहन के ऐसे गीत बजे कि उसकी सिसक चुपचाप सुनी गई। यही भारतीय फिल्म संगीत है, जहां हारमोनियम भी बजा, तो स्पेनिश गिटार भी। जहां मुजरे का संगीत भी सुना गया तो देश प्रेम के तराने भी और हां भारतीय जीवन में रचा बसा भक्ति संगीत भी।

भारतीय संगीत के इन अलग अलग पड़ावों को समझना जानना भी जरूरी है। यही वह अनमोल चीज है जिसके लिए भारतीय अपने ऊपर नाज कर सकते हैं। तीस के दशक से शुरू हुई यह संगीत यात्रा कई प्रयोगों के साथ आज भी चल रही है। बेशक आज के संगीत पर और बिना अर्थ के गीतों पर कुछ ऐतराज हो सकता है। पर यह भी एक प्रयोगवादी दौर है। कुछ समय यह चलता रहेगा। फिर हमें कुछ नया मिल जाएगा।1931 में 14 मार्च को मुंबई के मैजिस्टिक सिनेमा में जब पहली बोलती हुई फिल्म 'आलमआरा' आई, तो उसकी पहली अभिव्यक्ति गीत के रूप में ही थी। फिल्म में भिखारी बना पात्र गा रहा था, "दे दे खुदा के नाम पर"। डब्लू एमखान फिल्मों के पहले गायक थे। अफसोस

'आलम आरा' के प्रिंट गीत संगीत अब सुरक्षित नहीं है। 'आलम आरा' क्या बनी फिर तो सवाक फिल्मों की बाढ़ आ गई। 'इंद्रसभा' आई तो अपने साथ 71 गीत लाई। मास्टर निसार की आवाज का जादू छाया।बताया जाता है कि नितिन बोस के दिमाग में सबसे पहले प्लेबैक सिंगिग की कल्पना आई। 'धूपछांव' में पार्श्वगायन की पहली तकनीक का प्रयोग किया गया। इसमें थोड़ा विवाद है कि पार्श्वगायन की पहला प्रयोग नितिन बोस ने किया या सरस्वती देवी ने। लेकिन यह सब साथ साथ हुआ और फिल्म संगीत में नई हलचल हो गई। गायकों के लिए भी सुविधा हो गई। अब साजिंदे उनसे दूर नहीं बैठते थे।

भारतीय फिल्म संगीत अनेक सुनहरे पड़ावों से गुजरा है। 'आलम आरा' पहली बोलती हुई फिल्म थी। लेकिन इससे पहले भी फिल्मों में संगीत था। बेशक यह पार्श्व संगीत नहीं था। फिल्म के पर्दे पर चलते चित्रों के मुताबिक साजिंदे संगीत बजाया करते थे। वह फिल्म के पर्दे के निकट बैठे होते थे। तबला, हारमोनियम और सारंगी बजती। लोग पास में ही बज रहे इस संगीत का मजा लेते थे और उनकी नजरें फिल्म के परदे पर होती थीं।लेकिन जब 'आलमआरा' आई तो सब कुछ बदल गया। संगीत बनाना तब भी इतना सरल नहीं था। पहले शूटिंग की जगह पर संगीत रिकॉर्ड होता था। साजिंदे नजर न आएं इसलिए उन्हें वहीं पास में पेड़ या किसी और जगह छिपा कर रखा जाता था। उनकी पहचान छिपाने के लिए कभी-कभार तो उनके शरीर को पत्तों या किसी झाड़ी से भी लपेट दिया जाता था।फिल्म संगीत में हमें अपनी संस्कृति के कई रंग दिखे।

इन गीतों में सावन के झूले भी हैं, उड़ती पतंगे हैं, गरजती घटाएं है, विरहन की आग है तो बागों की बहार है। प्यार के नग्मों के लिए ऐसी धुनें बजी कि युवा उसमें खो गए। विरहन के ऐसे गीत बजे कि उसकी सिसक चुपचाप सुनी गई। यही भारतीय फिल्म संगीत है, जहां हारमोनियम भी बजा, तो स्पेनिश गिटार भी। जहां मुजरे का संगीत भी सुना गया तो देश प्रेम के तराने भी और हां भारतीय जीवन में रचा बसा भक्ति संगीत भी। भारतीय संगीत के इन अलग अलग पड़ावों को समझना जानना भी जरूरी है। यही वह अनमोल चीज है जिसके लिए भारतीय अपने ऊपर नाज कर सकते हैं। तीस के दशक से शुरू हुई यह संगीत यात्रा कई प्रयोगों के साथ आज भी चल रही है। बेशक आज के संगीत पर और बिना अर्थ के गीतों पर कुछ ऐतराज हो सकता है। पर यह भी एक प्रयोगवादी दौर है। कुछ समय यह चलता रहेगा। फिर हमें कुछ नया मिल जाएगा।

1931 में 14 मार्च को मुंबई के मैजिस्टिक सिनेमा में जब पहली बोलती हुई फिल्म 'आलमआरा' आई, तो उसकी पहली अभिव्यक्ति गीत के रूप में ही थी। फिल्म में भिखारी बना पात्र गा रहा था, "दे दे खुदा के नाम पर"। डब्लू एमखान फिल्मों के पहले गायक थे। अफसोस 'आलम आरा' के प्रिंट गीत संगीत अब सुरक्षित नहीं है। 'आलम आरा' क्या बनी फिर तो सवाक फिल्मों की बाढ़ आ गई। 'इंद्रसभा' आई तो अपने साथ 71 गीत लाई। मास्टर निसार की आवाज का जादू छाया।बताया जाता है कि नितिन बोस के दिमाग में सबसे पहले प्लेबैक सिंगिग की कल्पना आई। 'धूपछांव' में पार्श्वगायन की पहली तकनीक का प्रयोग किया गया। इसमें थोड़ा विवाद है कि पार्श्वगायन की पहला प्रयोग नितिन बोस ने किया या सरस्वती देवी ने। लेकिन यह सब साथ साथ हुआ और फिल्म संगीत में नई हलचल हो गई। गायकों के लिए भी सुविधा हो गई। अब साजिंदे उनसे दूर नहीं बैठते थे।हालांकि तब भी टीन की दीवार और छत वाले स्टूडियो होते थे।

कुछ संगीत निर्देशकों ने इसमे अपने ढंग से प्रयोग भी किए। यह वह दौर था जब कलाकार ही अपने गीत गाते थे। हां इसी समय ग्रामोफोन किसी अजूबे की तरह नजर आया। लोग उसे चहक चहक कर देखते थे, उसमें रस भरे गीत शुरू होते तो उसका आनंद लेते। संकेत यही था कि संगीत अब बदल रहा है। नई तकनीक संगीत को उड़ान देने वाली हैं।फिल्म संगीत में अगला दौर कुंदन लाल सहगल, पंकज मलिक, आरसी बोराल का था। गायकी में शुद्धता, गजल शायरी और दरबारी परंपरा की झलक भी थी। देखते ही देखते कुंदन लाल के गाए गीत लोगों के मन में बस गए।

'सरस्वती देवी' पहली महिला म्यूजिक डायरेक्टर बनी। नूरजहां, जोहराबाई अंबालेवाली, शमशाद बेगम की आवाज में दिलकश गीत सुने गए। केसी डे, पंकज मलिक और तिमिर बरन, गुलाम हैदर जैसे संगीतकार एक से बढ़ कर एक धुन दे रहे थे। नौशाद, 'शाहजहां' फिल्म के मधुर संगीत से अपनी दस्तक दे चुके थे। "जब दिल ही टूट गया, हम जीकर क्या करें" गीत हर जगह बज रहा था।इसके कुछ ही बाद 'बरसात'

और 'आवारा' फिल्म के गीतों ने संगीत को नयी परिभाषा दी। सौ सौ सांजिदों के साथ शंकर जयकिशन ने 'बरसात' के लिए अविस्मरणीय धुन बनाई। हर जुंबा पर था, "बरसात में हम से मिले तुम सजन", "हवा में उड़ता जाए"। या फिर 'आवारा' का गीत "आवारा हूं", रूस, पौलेंड में भी पहुंच गया। रूस में किसी भारतीय को देखते ही वहां लोग गाने लगते थे, "आवारा हूं"।

निष्कर्ष

एक अलग उद्योग न होने के परिणामस्वरूप, भारतीय संगीत उद्योग को भारतीय सरकार द्वारा अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है। वास्तव में, एड पेटो के लेख "अंतरिम अर्थव्यवस्था: भारत के डिजिटल संगीत उद्योग का परिचय" के अनुसार, "भारत के रिकॉर्ड किए गए संगीत उद्योग ने 2016 में प्रति व्यक्ति केवल 0.09 अमेरिकी डॉलर का व्यापार राजस्व अर्जित किया, जिससे यह वर्तमान में ट्रैक किए जा रहे सबसे खराब मुद्रीकृत संगीत बाजार बन गया।" ऐसा इसलिए है क्योंकि सरकार ने अभी तक लाइसेंसिंग, कॉपीराइट, प्रकाशन आदि के आसपास उचित सिस्टम नहीं बनाए हैं जो फिल्म उद्योग के बाहर के कलाकारों, संगीत रचनाकारों, गीतकारों और संगीत निर्माताओं की सेवा करते हैं।सोनी म्यूज़िक एंटरटेनमेंट और यूनिवर्सल म्यूज़िक ग्रुप जैसे प्रमुख रिकॉर्ड लेबल का भारतीय डिवीजन है। हालाँकि, एक कलाकार और रिकॉर्ड लेबल के बीच का रिश्ता लगभग हमेशा एक काम-के-लिए-किराए का अनुबंध होता है, जिसमें लेबल और प्रकाशकों के बीच कोई अंतर नहीं होता है। अधिकांश संगीतकारों को फ़िल्म निर्माण द्वारा काम पर रखा जाता है और लेबल मुख्य रूप से फ़िल्म उद्योग को सेवाएँ प्रदान करता है (क्योंकि यहीं से पैसा आता है)।

संदर्भ

विमल डा. 2005 हिंदी चित्रपट संगीत इतिहास, संजय प्रकाशन , दिल्ली प्रथम संस्करण।
शर्मा डा. इंदु 2006, भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय , कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण।
सिंह हरमिंदर हमराज, श्रीमती सविंदर कौर ,हिंदी फिल्म गीतकोष खंड - 1।
गर्ग, डा. उमा, संगीत का सौंदर्य बोध , संजय प्रकाशन दिल्ली।